Peer Reviewed Journal for M. Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 6 No. : 9 July - 2019

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

ISRS International

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Scanned with Oken Scanner

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	बालाघाट जिले की बैगा जनजाति में पोषण स्तर एवं स्वास्थ्य दशाओं का भौगोलिक अध्ययन	मीनाक्षी मेरावी	1-11
2	कबीर के काव्य में प्रेम और भक्ति	डॉ. सर्मीला त्यागी	12-13
3	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में नव्य वेदान्त एवं धर्म का समावेशी चिंतन	कृति पटेल	14-16
4	पुरातत्व संग्रहालयों में प्रदर्शित दशावतारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में)	रेनु चौधरी	17-22
5	सीहोर की शास्त्रीय संस्कृति	ज्ञानप्रकाश सिंह यादव	23-25
6	मासिक धर्म की समस्याओं पर योग का प्रभाव किशोरियों के संदर्भ में	डॉ. मनोज कुमार शर्मा लता पाटिल	26-29
7	स्वस्थ गर्भस्थ शिशु : योग ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में	डॉ. मनोज शर्मा रूबी श्रीवास्तव	30-34
8	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका	डॉ. सुभाष कुमार सोनी	35-38
9	भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन	सुभाष कुमार	39-45
10	विश्व व्यापार संगठन के प्रावधानों का भारतीय कृषि पर प्रभाव एवं उभरती चुनौतियाँ	डॉ. प्रियंका दुबे	46-51
11	मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में महिलाओं की स्थिति	डॉ. मंगलेश्वरी जोशी चाँदनी जैन	52-53
12	73 वें संविधान में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका	डॉ. राधिकेश जोशी	54-56
13	बाल अपराध के प्रमुख कारण	डॉ. विश्वास चौहान गीता परतती	57-60
14	महाभारत काल में राजा का स्वरूप	मंजू अवस्थी ज्योति शर्मा	61-64
15	महेश्वर एवं ऑकारेश्वर नदियों के संरक्षण पर सरकार के विभिन्न कार्यक्रम	डॉ. पी.डी. ज्ञानानी श्याम सिन्हा	65-68
16	असंगठित क्षेत्र में न्यूनतम मजदूरी की विभिन्न स्थिति	डॉ. मोहम्मद नजमी विपिन सोनी	69-71
17	कमलेश बख्शी के उपन्यासों में अस्मिता की तलाश	ममता सोलंकी	72-74
18	शिल्पी श्री हरि श्रीवास्तव जी की कला यात्रा	तनु दुबे डॉ. (श्रीमती) किरण शुक्ला भूपेन्द्र निगम	75-78
19	भारत में संचार प्रौद्योगिकी का विकास	डॉ. नुपूर निखिल देशकर अंकित पाण्डेय	79-81
20	दरभंगा जिला में कृषि विविधीकरण की सार्थकता	अनामिका कुमारी प्रो. हिमांशु शेखर	82-84
21	संस्कृत शिक्षण में अधुनिक मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. रश्मि जैन	85-89
22	भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचार	योगेश कुमार सिंह	90-94
23	पंचायतीराज में महिला सशक्तिकरण तथा ग्रामीण विकास पर गाँधीवादी विचार का प्रभाव	सुमित्रा बेनल	95-96
24	प्लास्टिक का बढ़ता हुआ उपयोग : पर्यावरण पर गंभीर खतरा	अपर्णा श्रीवास्तव	97-99
25	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	डॉ. शकीला खान	100-103

Scanned with Oken Scanner

Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 9 July 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
ISSN: 2394-3580
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

प्लास्टिक का बढ़ता हुआ उपयोग : पर्यावरण पर गंभीर खतरा

अपर्णा श्रीवास्तव
अतिथि सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावना :– बढ़ती आबादी और इसके साथ तकनीकी और औद्योगिक विकास के आधार जीवन का स्तर प्राप्त करने की चाह ने विश्व स्तर पर पर्यावरण को प्रभावित किया है। पिछले कुछ दशकों में तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और पर्यावरण के लिए खतरा पैदा करने वाले घातक पदार्थों के निरन्तर बढ़ते प्रयोग ने पर्यावरण और इसमें पाया जीवन के समस्त रूपों के आस्तित्व को चुनौती दी है।

वर्तमान उपभोक्तावादी युग में प्लास्टिक से निर्मित वस्तुओं का चलन अत्याधिक बढ़ गया है। फ्रीजर, किचन में प्रयुक्त होने वाला सामान या अन्य कोई उपयोग सामग्री हो प्लास्टिक/पी.व्ही.सी. या पॉलीथीन का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है और यह पूरी दुनिया पर हावी हो गया है। प्लास्टिक के बढ़ते हुए उपयोग के संबंध में यह कहा जाये तो कोई गलत नहीं होगा कि जिस प्रकार से पाषाण युग, ताम्रयुग व लौह युग आदि का विवरण मिलता है वैसे ही आज की इस सभ्यता को प्लास्टिक युग के रूप में जाना जाएगा।

प्लास्टिक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जैव विघटनीय (बायोडीग्रेडेबल) नहीं है। अतः इस कचरे को नष्ट करना आसान नहीं है। प्लास्टिक की पन्नियों से पर्यावरण पर दूरगामी दुष्प्रभाव होते है जो इस प्रकार है।

पर्यावरण पर प्रभाव :–

1. प्लास्टिक पूर्ण रूप से जैव अविघटनीय होता है पर्यावरण में सौ वर्षों से अधिक समय तक बना रहता है।
2. मानव स्वास्थ्य पर यह कार्सिनोजेनिक प्रभाव डालता है। त्वचा संबंधी रोग, कैंसर, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का कारण होता है।
3. मृदा में जैव श्वसन तंत्र एवं आर्द्रता ग्रहण करने की क्षमता को अवरूद्ध करता है जिससे पौधों का विकास प्रभावित होता है।
4. भूमिगत जल रिचार्ज में बाधा उत्पन्न करता है।
5. रंगीन/काले रंग की पॉलीथीन में रखी गई खाद्य सामग्री पॉलीथीन के रंग के प्रभाव से दूषित हो जाती है और स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती है।
6. प्लास्टिक/पॉलीथीन की पन्नियों को जलाने से सल्फरडाईआक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रोजन के–आक्साईड, हाइड्रोजन कार्बन्स, डाई–ऑक्सीजन, जैसी जहरीली गैस निकलती है जो पर्यावरण को दूषित करने के साथ मानव स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती हैं।
7. पॉलीथीन की पन्नियां सीवेज पाईप को अवरूद्ध करती है एवं गंदे पानी के निकास में रूकावट पैदा करती है। सीवेज पानी की गन्दगी से मच्छर आदि कीट बढ़ते है और बीमारियों को बढ़ावा देते है।
8. प्लास्टिक की पन्नियों में भरकर खाद्य पदार्थ/जूठन आदि फेंक दिया जाता है जिसको खाने से पालतू पशुओं गयों आदि का पाचन तंत्र अवरूद्ध हो जाता है तथा उनकी मृत्यु भी हो जाती है।

प्लास्टिक से निर्मित डिस्पोसेवल वस्तुओं व पॉलीथीन की पन्नियों का प्रयोग सस्ता होता हैं अतः सामान्य तौर पर इन्हें फेंकने में कोई हिचकता नहीं है। सर्वे द्वारा ज्ञात हुआ है कि पालीथीन की पन्नियों को खाने से प्रतिदिन 5 गायों की मौत हो जाती है।

मध्यप्रदेश में लगभग 50 प्रशित प्लास्टिक की रिसायकलिंग अर्थात पुर्नचक्रण कर प्रयोग किया जाता है। पुनर्चक्रित पालीथीन सस्ती होती है। अतः इसका उपयोग होटलों, सब्जी वाले द्वारा अधिक किया जाता है। वैज्ञानिक शोध द्वारा ज्ञात किया है कि रंगीन पन्नियों में घातक रसायन मिले होते हैं जैसे–

काला रंग – लेड
हरा रंग – बेरियम
लाल रंग – क्रोमियम
नीला रंग – तांबा

3/9
Scanned with Oken Scanner